

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 6 अध्याय 14: चित्रकेतु का शोक

3 October 2026



पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



राजा चित्रकेतु का चिर-प्रतीक्षित शिशु अकस्मात् मृत्यु द्वारा छीन लिया जाता है, और समूची पृथ्वी पर शासन करने वाला सम्राट् अपनी शोकाकुल रानी के साथ उस नन्हें शरीर के पास असहाय रोता रह जाता है — एक ऐसा शोक जिसे भगवान् शीघ्र ही ज्ञान का द्वार बना देंगे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विङ्गम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। षष्ठ स्कन्ध का चौदहवाँ अध्याय एक नई और कोमल कथा का आरम्भ करता है। यह सोचते हुए कि वृत्र जैसे राक्षस में शुद्ध भक्ति कैसे उत्पन्न हो सकी, राजा परीक्षित को उस आत्मा का पूर्व जीवन सुनाया जाता है — राजा चित्रकेतु की कथा, एक पराक्रमी सम्राट् जिसकी पुत्र की एकमात्र

अभिलाषा पूर्ण होती है, किन्तु शिशु मृत्यु द्वारा छीन लिया जाता है, जो राजा को एक ऐसे शोक में डुबो देता है जो उसके जागरण की भूमि बन जाएगा।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 6 (षष्ठ स्कन्ध)
- अध्याय: 14 (चतुर्दश अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: राजा चित्रकेतु का विलाप
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए; कथा के भीतर ऋषि अंगिरा तथा राजदम्पति
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित; बाह्य कथा में नैमिषारण्य के ऋषिगण
- मुख्य स्थल: शूरसेन राज्य तथा राजा चित्रकेतु का राजमहल
- केन्द्रीय विषय: चित्रकेतु को चिर-प्रतीक्षित पुत्र की प्राप्ति तथा शिशु की मृत्यु पर राजा का विलाप
- मुख्य श्लोक-परिधि: स्कन्ध 6, अध्याय 14, श्लोक 1-61
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

परीक्षित का विस्मय

राजा परीक्षित विस्मय से भर उठे। उन्होंने पूछा, पापी वृत्र के हृदय में, जिसका स्वभाव रज और तम से शासित था, सर्वशक्तिमान् नारायण के प्रति अटल भक्ति कैसे उत्पन्न हो सकी? भगवान् विष्णु के चरणों के प्रति भक्ति सहज ही न तो उन देवताओं में उत्पन्न होती है जिनकी बुद्धि शुद्ध है, न उन ऋषियों में जिनके मन निष्कलंक हैं। असंख्य प्राणियों में केवल कुछ ही धर्म का आचरण करते हैं; उनमें कुछ ही मुक्ति चाहते हैं; और उसे चाहने वाले सहस्रों में मुश्किल से एक पूर्णता प्राप्त करता है। सबसे दुर्लभ, परीक्षित ने कहा, वह आत्मा है जो शान्त है और पूर्णतः नारायण को समर्पित (श्लोक 1-5)।

मुक्तानामपि सिद्धानां नारायणपरायणः ।

सुदुर्लभः प्रशान्तात्मा कोटिष्वपि महामुने ॥ ५ ॥

muktānām api siddhānām nārāyaṇa-parāyaṇaḥ su-durlabhaḥ praśāntātmā koṭiṣv api mahā-mune

अर्थ: हे महामुनि, करोड़ों मुक्त तथा सिद्ध आत्माओं में भी, वह जो पूर्णतः शान्त और भगवान् नारायण को ही समर्पित हो, अत्यन्त दुर्लभ है। (स्कन्ध 6, अध्याय 14, श्लोक 5)

उत्तर में, श्रीशुकदेव ने इस प्रश्न का स्वागत किया और वह प्राचीन आख्यान आरम्भ किया जो उन्होंने वेदव्यास, नारद तथा देवल से सुना था — राजा चित्रकेतु की कथा (श्लोक 6-9)।

निःसन्तान सम्राट्

शूरसेन देश में, श्रीशुकदेव ने कहा, चित्रकेतु नामक एक सम्राट् राज्य करते थे, जिन्हें पृथ्वी प्रत्येक इच्छित वस्तु प्रदान करती थी। उनकी एक करोड़ पत्नियाँ थीं, फिर भी, समर्थ होते हुए भी, उन्हें किसी से कोई सन्तान न हुई। अपनी समस्त सुन्दरता, उदारता, यौवन, कुल, विद्या और सार्वभौम सत्ता के होते हुए भी, एक शोक उनके हृदय को खोखला कर रहा था: वे निःसन्तान थे, और उनका धन, रानियाँ, अथवा समूची पृथ्वी का साम्राज्य उन्हें प्रसन्न न कर सका (श्लोक 10-13)।

आसीद्राजा सार्वभौमः शूरसेनेषु वै नृप ।

चित्रकेतुरिति ख्यातो यस्यासीत्कामधुम्ही ॥ १० ॥

āsīd rājā sārvaḥmauḥ śūraseneṣu vai nṛpa citraketur iti khyāto yasyāsīt kāmadhūṁ mahī

अर्थ: हे राजन्, शूरसेन देश में चित्रकेतु नामक एक सार्वभौम सम्राट् थे, जिनके लिए पृथ्वी स्वयं कामधेनु के समान थी। (स्कन्ध 6, अध्याय 14, श्लोक 10)



ऋषि अंगिरा निःसन्तान चित्रकेतु के राजमहल में आते हैं, राजा के गुप्त शोक को भाँपते हैं, और पुत्र के लिए उनकी लालसा सुनते हैं (श्लोक 14-26)।

एक दिन अपने भ्रमण के क्रम में प्रतापी ऋषि अंगिरा राजा के घर आए। चित्रकेतु ने प्रत्येक विधि से उनका सम्मान किया और एकाग्र मन से उनके पास बैठे। ऋषि ने, राजा के गुप्त शोक को भाँपकर, देखा कि उनका मुख चिन्ता से मलिन है और उन्होंने अपनी अभिलाषा का विषय प्राप्त नहीं किया है। विनय से झुके हुए, चित्रकेतु ने स्वीकार किया कि निःसन्तान होने के कारण न सत्ता और न समूची पृथ्वी का धन उन्हें कोई आनन्द देता है, और ऋषि से प्रार्थना की कि वे उन्हें एक पुत्र प्रदान करें जिसके द्वारा वे उस अन्धकारमय लोक को पार कर सकें जो निःसन्तान मरने वालों की प्रतीक्षा करता है (श्लोक 14-26)।

वरदान तथा जन्म

करुणा से भरकर, अंगिरा ने एक पवित्र आहुति तैयार की और उसे त्वष्टा देव को अर्पित किया, फिर उस आहुति का शेष भाग राजा की ज्येष्ठ और श्रेष्ठ रानी कृतद्युति को दिया। किन्तु ऋषि के आशीर्वाद में एक मौन चेतावनी छिपी थी (श्लोक 27-28)।

अथाह नृपतिं राजन् भवितैकस्तवात्मजः ।

हर्षशोकप्रदस्तुभ्यमिति ब्रह्मसुतो ययौ ॥ २९ ॥

athāha nṛpatiṁ rājan bhavitaikas tavātmajaḥ harṣa-śoka-pradas tubhyam iti brahma-suto yayau

अर्थ: तब ब्रह्मा के पुत्र ने राजा से कहा: तुम्हें एक पुत्र होगा जो तुम्हें आनन्द और शोक दोनों देगा — और यह कहकर ऋषि चले गए। (स्कन्ध 6, अध्याय 14, श्लोक 29)



अंगिरा एक पवित्र आहुति अर्पित कर उसका शेष रानी कृतद्युति को देते हैं, आनन्द और शोक दोनों देने वाले पुत्र की भविष्यवाणी करते हुए (श्लोक 27-29)।

समय पर कृतद्युति ने गर्भ धारण किया, और गर्भस्थ शिशु शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा के समान दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगा। एक पुत्र उत्पन्न हुआ, समस्त शूरसेनवासियों के परम आनन्द के लिए। हर्षित राजा ने, स्नान से पवित्र होकर, ब्राह्मणों से आशीर्वाद दिलवाए और पवित्र जन्म-संस्कार कराए, और उन्हें स्वर्ण-रजत, वस्त्र-आभूषण, ग्राम, अश्व, गज और छह करोड़ गौएँ दीं। अपनी वृष्टि बरसाते मेघ के समान, उन्होंने अपनी प्रजा की प्रत्येक इच्छा पूरी की, और चिर-प्रतीक्षित शिशु के प्रति उनका प्रेम दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया (श्लोक 30-36)।



समूचे शूरसेन के आनन्द के लिए एक पुत्र जन्म लेता है, और कृतज्ञ राजा ब्राह्मणों तथा प्रजा पर उदार दान बरसाते हैं (श्लोक 30-36)।

आनन्द शोक में बदलता है

फिर भी उस वरदान में ही उसकी छाया थी। जैसे-जैसे राजा का शिशु और उसकी माता के प्रति स्नेह गहराता गया, अन्य रानियाँ — निःसन्तान और उपेक्षित — ईर्ष्या और आत्म-भर्त्सना से जलने लगीं। अपनी सौत के सौभाग्य पर ईर्ष्या से जलती इन निर्दय-हृदया स्त्रियों ने अपना विवेक खो दिया और गुप्त रूप से शिशु को विष दे दिया। कृतघृति, इस अपराध से अनजान, समझीं कि उनका शिशु सो रहा है; किन्तु जब धाय उसे जगाने गई, तो उसने पाया कि नन्हें शरीर से प्राण जा चुके हैं, और वह चीख उठी और मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पड़ी (श्लोक 37-46)।

धाय का विलाप सुनकर रानी दौड़ी आई, अपने इकलौते पुत्र को अकस्मात् मृत्यु का ग्रास देखा, और बिखरे केश तथा अस्त-व्यस्त वस्त्रों सहित मूर्च्छित हो गई। समूचा राजमहल, स्त्री-पुरुष सभी, रोते हुए आए; यहाँ तक कि अपराधी रानियों ने भी झूठे आँसू बहाए। राजा, यह सुनकर कि उनका पुत्र मर गया, लड़खड़ाते हुए आए और शिशु के पास मूर्च्छित गिर पड़े, उनका कण्ठ शोक से इतना रुँध गया कि वे बोल न सके। तब पतिव्रता रानी अनेक स्वरों में विलाप करने लगीं, अपने वक्ष को आँसुओं से भिगोती हुई, निकट खड़े सभी का शोक बढ़ाती हुई (श्लोक 47-53)।

रानी का विलाप

अपनी व्यथा में रानी ने भाग्य के विरुद्ध ही पुकार की, विधाता को अपनी सृष्टि के विरुद्ध कर्म करने के लिए — बड़ों के जीवित रहते एक शिशु को ले लेने के लिए — उपालम्भ देती हुई, और अपने नन्हें पुत्र से विनती करती हुई कि वह अपनी असहाय माता और शोकाकुल पिता को न त्यागे। “उठो, प्यारे,” वह रोई, “तुम्हारे खेल-साथी तुम्हें पुकार रहे हैं; तुम इतनी देर सो चुके — कुछ खाओ, और हमारा शोक हर लो।” किन्तु उत्तर में कोई मधुर वचन न आया। उनके साथ सम्राट् चित्रकेतु भी उच्च स्वर में विलाप करने लगे, और जब राजदम्पति शोक कर रहे थे, उनके चारों ओर सभी रो पड़े और समूचा दरबार मानो निर्जीव हो गया। राजा को निराशा में समस्त धैर्य खोया जानकर, ऋषि अंगिरा अब फिर उस स्थल पर प्रकट हुए, और उनके साथ देवर्षि नारद आए (श्लोक 54-61)।



राजदम्पति की निराशा की गहराई में, ऋषि अंगिरा और नारद शोकाकुल राजा के पास प्रकट होते हैं (श्लोक 59-61)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान् के प्रति शुद्ध भक्ति समस्त प्राप्तिओं में दुर्लभतम है। करोड़ों मुक्त आत्माओं में भी, परीक्षित कहते हैं, नारायण को पूर्णतः समर्पित आत्मा दुर्लभ है — जो वृत्र की भक्ति को इतना विस्मयकारी बनाती है (श्लोक 5)।
2. सांसारिक परिपूर्णता एक रिक्त हृदय को नहीं भर सकती। चित्रकेतु समूची पृथ्वी पर शासन करते हैं, फिर भी एक अपूर्ण अभिलाषा उनके समस्त वैभव से आनन्द छीन लेती है (श्लोक 12-13)।
3. जिस वस्तु की हम सबसे अधिक लालसा करते हैं, वह आनन्द और शोक दोनों लाती है। ऋषि का आशीर्वाद इसे स्पष्ट कह देता है: चिर-प्रतीक्षित पुत्र आनन्द और शोक दोनों लाएगा, जैसे गहरी आसक्ति का प्रत्येक विषय लाता ही है (श्लोक 29)।
4. आसक्ति दुःख में परिपक्व होती है। शिशु के प्रति राजा का बढ़ता प्रेम, और रानियों की ईर्ष्या, मिलकर त्रासदी तैयार करते हैं — यह दिखाते हुए कि इच्छा और ईर्ष्या शोक को जन्म देती हैं (श्लोक 36-43)।
5. शोक कृपा की देहरी बन सकता है। राजदम्पति की निराशा की गहराई में, ऋषि अंगिरा और नारद आते हैं — एक संकेत कि भगवान् की कृपा ठीक तभी निकट आती है जब सांसारिक आशा विफल हो जाती है (श्लोक 61)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

यह अध्याय लगभग असह्य रूप से मानवीय है। एक महान् राजा, जिसे संसार की कोई वस्तु अप्राप्त नहीं, एक रिक्त पालने से टूट जाता है, और जब अन्ततः पालना भर जाता है, तो उसका आनन्द आने वाले घाव को और गहरा ही करता है। ऋषि उसे पहले ही चेता देते हैं — यह पुत्र तुम्हें आनन्द और शोक देगा — और वैसा ही होता है, क्योंकि यही उस सब का स्वभाव है जिसे हम बहुत कसकर पकड़ते हैं। भागवत न राजा की व्यथा से मुँह मोड़ता है, न रानी की हृदय-विदारक विनती से; वह शोक को पूरा शोक होने देता है। और फिर भी वह समूची त्रासदी को भक्ति के एक प्रश्न से घेरता है और उसे दो सन्तों के मौन आगमन से समाप्त करता है। यही इस अध्याय की छिपी कृपा है: कि हमारी गहनतम हानियाँ

कथा का अन्त नहीं, अपितु प्रायः उसका सच्चा आरम्भ हैं, वह क्षण जब आत्मा, प्रत्येक छोटी सान्त्वना से रिक्त होकर, भगवान् के विषय में सुनने को तैयार हो जाती है। चित्रकेतु का शोक सच्चा है, किन्तु वह वह द्वार भी है जिससे होकर ज्ञान भीतर आएगा। जब हमारे अपने हृदय उस वस्तु से टूटते हैं जिसे हम रख न सके, तब हम विश्वास कर सकते हैं कि वही कृपा हमारे निकट भी आ रही है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, एक ऐसी वस्तु या व्यक्ति को भगवान् के सम्मुख कोमलता से रखिए जिससे आप प्रेम करते हैं और जिसे खोने से डरते हैं। अपने प्रेम को नकारे बिना, उसे उनके संरक्षण में अर्पित कीजिए, यह स्वीकार करते हुए कि जिसे हम सँजोते हैं वह हमें उधार दिया गया है और उन्हीं का है। यदि आप कोई पुराना शोक वहन करते हैं, तो उसे छिपाइए मत; उसे भगवान् से सच्चाई से कहिए जैसे रानी ने अपना शोक उच्च स्वर में कहा, और उनसे प्रार्थना कीजिए कि वे उस हानि को भी गहरे विश्वास का द्वार बना दें। फिर उनका पावन नाम शान्त रूप से लीजिए, अपनी आसक्तियों को उनकी देखरेख में रखते हुए।

उपसंहार

षष्ठ स्कन्ध का चौदहवाँ अध्याय एक ऐसे सम्राट् की कथा कहता है जिसके पास सब कुछ था सिवाय उस एक वस्तु के जिसकी वह लालसा करता था, जिसे उसने पाया और मृत्यु से खो दिया। ऋषि के आशीर्वाद ने पहले ही कह दिया था कि चिर-प्रतीक्षित पुत्र आनन्द और शोक दोनों लाएगा, और वैसे ही राजा का बढ़ता सुख एक ऐसे विलाप में बदल जाता है जो सुनने वाले सभी का हृदय तोड़ देता है। फिर भी उस निराशा की तली में ही, सन्त अंगिरा और नारद प्रकट होते हैं — भगवान् की कृपा तब आती हुई जब प्रत्येक सांसारिक आशा विफल हो चुकी हो। जैसे-जैसे यह स्कन्ध अगले अध्याय में चित्रकेतु को सान्त्वना देने की ओर बढ़ता है, हम इस अध्याय का कोमल सत्य साथ ले चलते हैं: कि शोक, पूरा अनुभव किया और अर्पित किया गया, कृपा की देहरी बन सकता है।

श्रीमद्भागवतम् की दिव्य विद्या हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

संदर्भ तथा साभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), षष्ठ स्कन्ध, चतुर्दश प्रवचन।
- शृंखला: Srimad Bhagavatam Wisdom · Biswa Sanatan Dharma Seva Trust।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा अनुशांसा का अनुसरण करते हुए प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में और उनके अर्थ सारांश के रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक द्वारा संबद्धता या समर्थन का कोई अभिप्राय नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-6-chapter-14-lamentation-of-citraketu-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

